✺ 15 मई 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ✺

✺ ज्ञान-

1] तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने के लिए सर्च लाइट मिलती है नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार। बाप कहते हैं जो मेरे अर्थ सब कुछ त्याग सर्विस में लगे रहते हैं, वह बुहत प्यारे लगते हैं। दिल पर भी चढ़ते हैं।

2] जो सितारे अच्छे सर्विसएबुल हैं, उन्हों को ही देखता रहता हूँ। बाप का लव है ना। स्थापन में मदद करते हैं। हूबहू कल्प पहले मिसल यह राजधानी स्थापन हो रही है, अनेक बार हुई है। यह तो ड्रामा का चक्र चलता रहता है। इमें फिक्र की भी कोई बात नहीं रहती। बाबा के साथ हैं ना।

3] माया बड़ी दुस्तर है, इतनी शक्ति है जो बच्चों को भुला देती है। वह खुशी स्थाई नहीं रहती है। तुम बाप को याद करने बैठते हो, बैठे-बैठे बुद्धि और तरफ चली जाती है। यह सब हैं गुप्त बातें। कितनी भी कोशिश करेंगे परन्तु याद कर नहीं सकेंगे। फिर कोई की बुद्धि भटक-भटक कर स्थिर हो जाती है, कोई फट से स्थिर हो जाते हैं कोई से तो कितना भी माथा मारो तो भी बुद्धि में ठहरता नहीं। इसको माय की युद्ध कहा जाता है।

4] बाप कहते हैं कितने बच्चे आश्चर्यवत् भागन्ती हो गये। मुझ माशूक को इतना याद करते थे। अब मैं आया हूँ तो फिर छोड़कर चले जाते हैं। माया कैसा थप्पड़ लगा देती है। बाबा अनुभवी तो है ना! बाबा का अपनी सारी हिस्ट्री याद है। सिर पर टोपी, नंगे पांव दौड़ता था.... मुसलमान लोग भी बहुत प्यार करते थे। बहुत खातिरी करते थे। मास्टर का बच्चा आया जैसे गुरू का बच्चा आया। बाजरी का ढोढा खिलाते थे।

✺ योग-

1] बेहद का बाप और हम बच्चे बैठे हैं। तुम बच्चे जानते हो बाप इस शरीर में आया हुआ है। दिव्य दृष्टि दे रहे हैं, सर्विस कर रहे हैं। तो उस एक को ही याद करना चाहिए।

2] मीठे-मीठे बच्चों, पतित से पावन बनने के लिए बाप को याद करो।

3] मैं इनमें प्रवेश करता हूँ। कहाँ आकर बैठता हूँ, इनकी आत्मा जहाँ बैठी है, उनके बाजू में आकर बैठता हूँ। जैसे गुरू लोग अपने शिष्य को बाजू में गद्दी पर बिठाते हैं। उनका भी स्थान यहाँ है, मेरा भी यहाँ है। कहता हूँ हे आत्माओं, मामेकम् याद करो तो पाप विनाश हो जायेंगे। मनुष्य से देवता बनना है ना।

✺ धारणा-

1] याद के समय बुद्धि भटकती है, स्थिर बुद्धि न होने कारण खुशी नहीं रह सकती। माया के तूफान दीपकों को हैरान कर देते हैं। जब तक कर्म, अकर्म नहीं बनते हैं तब तक खुशी स्थाई नहीं रह सकती।

✺ सेवा-

1] वर्तमान समय बहुत सी अत्मायें अन्दर टेन्शन से दु:खी परेशान हैं, बिचारों में आगे बढ़ने की हिम्मत नहीं है। आप उन्हें हिम्मत दो। जैसे किसको टांग नहीं होती है तो लकड़ी की टांक बनाकर देते हैं तो चलने लगता है। ऐस आप उन्हें हिंमत की टांग दो, क्योंकि बापदादा देखते हैं अज्ञानी बच्चों का अन्दर क्या हाल है, बाहर का शो तो बहुत अच्छा टिपटाप है लेकिन अन्दर बहुत दु:खी हैं तो मास्टर रहमदिल बनो।